



SRI BHAGAWAN MAHAVEER JAIN EVENING COLLEGE

(Affiliated to Bengaluru Central University)

V V Puram, Bangalore – 560 004

IV Sem B.Com – Film Review

- Nishanth
- Katha

निशांत फिल्म समीक्षा

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित फिल्म निशांत सन् 1975 में रिलीज हुई। इस फिल्म का उद्देश्य ग्रामीण समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर करना है। इस फिल्म में ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदार, महाजन, साहूकार आदि द्वारा निरीह जनता, किसानों एवं स्त्रियों पर किए जा रहे शोषण को बड़े ही मार्मिक रूप में दर्शाया गया है। इस फिल्म के मुख्य अभिनेता हैं – गिरीश कर्नाड (प्रधानाध्यापक), शबाना आजमी (प्रधानाध्यापक की पत्नी सुशीला), अमरीश पुरी (बड़े ज़मीनदार), अनंत नाग (जमींदार का भाई अंजैया), मोहन अगाशे (जमींदार का भाई प्रसाद), नसीरुद्दीन शाह (जमींदार का भाई अंजैया विश्वम), स्मिता पाटिल (विश्वम की पत्नी रुक्मणी), सत्यदेव दुबे (पुजारी)।

फिल्म बड़े जमींदार के अत्याचार से शुरू होता है। इसके तीन भाई हैं अंजैया, प्रसाद और विश्वम। बड़े जमींदार के दो भाई अंजैया और प्रसाद अपने बड़े भाई के दुष्कर्म में बराबर के सहभागी हैं। इन दोनों का काम गाँव के लोगों को सताना और प्रताड़ित करना है। ये दोनों भाई हर दिन किसी न किसी गाँववाले का शोषण करते हैं। ये दोनों शराबी हैं और निरीह स्त्रियों को अपना हवस का शिकार बनाते हैं। वहीं विश्वम इनके विपरीत सीधा-साधा व्यक्ति है और इनके कुकर्मों से दूर रहता है। एक दिन उस गाँव में सरकारी स्कूल में – गिरीश कर्नाड (प्रधानाध्यापक), शबाना

आज़मी (प्रधानाध्यापक की पत्नी सुशीला) का आगमन होता है। एक दिन विश्वम की आँखें सुशीला से ठकराती हैं और वह उसके सौंदर्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो जाता है। वह उसे पाना चाहता है और एक दिन अपने दोनों पाजी भाईयों की मदद से सुशीला को उसके पति की आँखों के सामने अगवा कर लेता है और अपने ही घर लाकर उसे कैद कर लेता है और उसके साथ दुष्कर्म करता है। वहीं प्रधानाध्यापक अपनी पत्नी सुशीला को छुड़ाने के लिए जी-तोड़ कोशिश करता है पर नाकाम रहता है। पुलिस भी उसकी मदद नहीं करती। अंत में गाँव का पुजारी उसे सांत्वना देते हैं और दोनों मिलकर गाँववालों को जमींदार के अत्याचार से लड़ने की गुहार लगाते हैं। गाँव वाले भी जमींदार के अत्याचार से तंग आकर उनका साथ देने के लिए उसे सबक सिखाने के लिए तैयार हो जाते हैं। एक दिन सब मिलकर जमींदार के घर पर दावा बोलते हैं और इस हमले में पूरे जमींदार के परिवार वालों के साथ निरीह सुशीला और रुक्मणी को भी मौत के घाट उतार देते हैं।

फिल्म का अंत बड़ा ही दुखद है। आधुनिक समय में भी जमींदारों के द्वारा गाँवों में कमजोरों पर किए जा रहे अत्याचार को दर्शाया गया है। इस अत्याचार और शोषण के विरुद्ध उठ खड़े होने वाले पात्रों को कुचल दिया जाता है।

इस फिल्म को वर्ष 1977 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

'कथा' फिल्म समीक्षा

साई परांजपे निर्देशित 1983 में रिलीज़ कॉमेडी फिल्म 'कथा' न केवल सफलता मिली थी, बल्कि समीक्षकों ने भी इस फिल्म को सराहा था। कछुआ और खरगोश की प्रतिस्पर्धा की लोक कथा पर आधारित इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह एक सीधे सादे किस्म के कछुआ राजाराम की भूमिका में थे, जो पड़ोस की लड़की संध्या (दीप्ति नवल)से प्रेम करता है, लेकिन अपने प्यार का इज़हार नहीं कर पाता। फारूक शेख बासुदेव की भूमिका में थे। इस फिल्म में राजाराम, बासुदेव का मित्र है। बासुदेव भी संध्या की ओर आकर्षित होता है। संध्या को पाने के लिए कछुआ और खरगोश की यह अनोखी कहानी अपने अंदाज़ की अलग कॉमेडी फिल्म है। राजाराम संध्या को अपने प्रेम को अभिव्यक्त नहीं कर पाता। आस पड़ोस के लोग-राजाराम के भोलेपन का भूरपूर उठाते हैं। वहीं दूसरी ओर बासुदेव अपनी झूठी प्रतिष्ठा की कहानी गढ़ता और संध्या को अपने ओर आकर्षित करने में सफल होता है। बासुदेव आगे बढ़ने के लिए सारे हथकंडे अपनाता है। राजाराम और बासु में जमीन आसमान का अंतर है। राजाराम के लिए प्रेम करना या प्रेम में होना एक पवित्र बात है जबकि बासु के लिए लड़की पटाना और उसे घुमाना फिरना, उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित करना ही प्रेम है। चालबाज बासु को अच्छे से पता है कि मानव प्रशंसा से बहुत जल्दी पिघलता है। निठल्ला बासु राजाराम से उसके

बॉस के बारे में कुछ जानकारियाँ लेकर उसका पीछा करना शुरू कर देता है और ऐसा चक्कर चलाता है कि पचास तरह के झूठ बोलकर राजाराम की कम्पनी में मैनेजर की नौकरी पा जाता है।

लोगों को झांसा देना बासु की फितरत है। बॉस के घर पार्टी में जाने पर वह भांप जाता है कि उसके बॉस और बॉस की पत्नीकी उम्र में काफी अंतर (मल्लिका साराभाई) अनुराधा - है। बस इसी का फायदा उठा वह अनुराधा पर भी डोरे डालने लगता है। बॉस की बेटी को देखता है, तो उसे भी शीशे में उतारने की चेष्टा करता है। अंत में बाशुदेव पकड़ा जाता है और वह वहाँ से फरार होता है।

यह आश्चर्य का विषय है कि अस्सी के दशक में 'कथा' के बनने से पहले से ही और उसके बाद तो खासकर हिंदी फिल्मों के नायक बासु जैसे चरित्र के ही हैं, जो नायिका को पटाकर प्रेम में होने के (भांति भांति के तौर तरीके अपनाकर) दावे किया करते हैं और राजाराम जैसे नायक तो 'कथा' के बाद हिंदी फिल्मों के धरातल से गायब ही हो गये।

मुख्य कलाकारों जैसे नसीरुद्दीन शाह, फारुख शेख, दीप्ती नवल, मल्लिका साराभाई और विनी परांजपे के बहुत अच्छे अभिनय से फिल्म का स्तर कई गुना बढ़ जाता है। और साहयक भूमिकाओं में नियुक्त अभिनेतागण भी फिल्म को वास्तविक और असरदार बनाने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते। बम्बई की एक असली चाल में फिल्म को शूट करने

से और वहीं के रहने वाले कुछ लोगों को फिल्म में भूमिकाएं देने से फिल्म में वास्तविकता का पुट आ गया है।

दर्शकों को गुदगुदाकर हंसाने वाली 'कथा' फिल्म हिंदी सिनेमा की सर्वकालिक अच्छी फिल्मों में शामिल किया जाता रहेगा।

